पद :- 3

म्हारॉं री गिरधर गोपाल दूसरआँ णा कूयाँ ।
दूसराँ णा कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ ।।
भाया छाँणयाँ, बन्धा छाँड्याँ संगाँ सूयाँ ।
साधाँ ढिग बैठ बैठ, लोकलाज खूयाँ ।
भगत देख्याँ राजी ह्याँ, जगत देख्याँ रूयाँ ।
दूध मथ घृत काढ. लयाँ डार दया छूयाँ ।
राणा विषरो प्यालो भेज्याँ, पीय मगण हूयाँ ।
मीराँ री लगण लग्याँ होणा हो जो हूयाँ ।।

व्याख्या :- प्रस्तुत पद में मीरा ने अपने हृदय के उन उद्‌गारों को व्यक्त किया है जिससे हमें उसकी क्रांतिकारी सोच का परिचय मिलता है। कृष्ण के प्रति प्रेम, अनुरक्ति में वह इस प्रकार रम गई है कि उसे किसी भी चीज का ख्याल नहीं रहता। अपने पूज्य आराध्य के प्रति मीरा अपना अनन्य प्रेम व्यक्त करती हुई कहती है कि मेरे तो दादा श्री कृष्ण हैं और जग में उनके अलावा कोई नहीं है। मीरा श्री कृष्ण का बाह्य रूप का वर्णन करते हुई कहती है कि जिसके सिर पे मोर मुकुट है वही उसका स्वामी है, उसका पति है। मीरा पुनः कहती है कि इस जग के नाते-रिश्ते उसे नहीं भाते। माता-पिता, भाई बन्धु कोई भी इस जगत में उसका अपना नहीं है। कोई भी श्री कृष्ण के प्रति उसके प्रेम और उस प्रेम के कारण जग से मिली पीड़ा, यातना को, उसके दुख को नहीं समझ पाता, इसलिए मीरा यह कहती है कि उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। वह श्री कृष्ण के प्रेम में इतनी अनुरक्त है कि जहां कहीं भी उसके आराध्य की चर्चा होती है पूजा होती है या प्रवचन होते हैं तो

उसने अपनी चुनरी को जो कि किसी भी स्त्री के लिए लज्जा का आवरण होता है, स्त्री के लाज का परिचायक होता है। उस चुनरी के मीरा ने टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं और उसकी जगह लोई को ओढ़ लिया है। उसने मूंगे-मोती की माला को उतार कर फेंक दिया है और वन से प्राप्त प्राकृतिक चीजों की माला पहन ली है। श्री कृष्ण के प्रति उसके प्रेम के कारण संसार ने उसे बहुत पीड़ा पहुँचाई है परन्तु फिर भी मीरा का श्री कृष्ण के प्रति प्रेम कम नहीं हुआ बल्कि वह और भी प्रगाढ़ होता चला गया। वह कहती है कि उसने अपने आंसुओं से सिंच-सिंच कर श्री कृष्ण के प्रति अपना प्रेम रूपी बेल बोया है। वह कहती है कि अब तो उस प्रेम रूपी बेल के फलित होने का समय आ गया है और आनंद ही आनंद प्राप्त होने वाला है। ~~पुनः~~

पुनः वह कहती है कि किसी प्रकार दूध को मथ कर उसमें से अमूल्य चीज अर्थात मक्खन को छान लिया जाता है ठीक उसी प्रकार मीरा ने भी अपनी आत्मा, अपने अंतर्मन को मथ कर श्री कृष्ण के प्रति प्रेम को छान लिया है। पुनः वह कहती है कि जब दूध से मक्खन को निकाल लिया जाता है तो उसके छाछ को कोई भी सकता है। उसी प्रकार अपने हृदय में श्री कृष्ण का प्रेम जागृत कर मीरा निडर हो गई है। अब उसे किसी बात से फर्क नहीं पड़ता। पुनः वह कहती है कि जग उसे देख रहा है क्योंकि वह इस जग में केवल श्री कृष्ण की भक्ति के लिए ही जन्मी है। इसके अलावा संसार में उसके लिए कोई दूसरा कार्य नहीं है। वह कहती है कि वह तो उस मोर मुकुटधारी मोहिनी सूरत वाले श्री कृष्णजी की दासी है और इस संसार में वही मीरा को तार सकते हैं। आप मुझे इस भवसागर से पार ~~उ~~ उतारिए।

पद:-4

माई री! मैं तो लियो गोविन्दो मोल
कोई कहे चान, कोई कहे चौड़े, लियो री बजन्ता ढोल
— — — — — — — — — — —
— — — — — — — — — — —

व्याख्या :- प्रस्तुत पद में मीराबाई अपनी सखी से कहती है- माई मैंने श्री कृष्ण को मोल ले लिया है। कोई कहता है अपने प्रियतम को चुपचाप बिना किसी को बताए पा लिया हैं। कोई कहता है, खुल्लम खुला सबके सामने मोल लिया हैं।

मैं ढोल-बजा बजाकर कहती हूँ कि बिना छिपाव दुराव सभी के समने लिया हैं। कोई कहता है, तुमने सौदा महंगा लिया हैं तो कोई कहता है सस्ता लिया है। अरे सखी मैंने तो तराजू से तोल कर गुण- अपगुण देखकर मोल लिया हैं कोई काला कहता है तो कोई गोरा मगर मैंने तो अपनी आँखों को खोलकर यानि सोच समझकर कृष्ण को खरीदा है, मीरा कहती है कि हे प्रभु दरसन दीजिए ताकि पूर्व जन्म का पाप से मुक्ति मिले।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)

हिन्दी विभाग

राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर

(BRABU MUZAFFARPUR)

मो० नं० - 8292271041

ईमेल — benamkumar15@gmail.com

दिनांक
17/08/2020